P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-1* April - 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

पारिवारिक समायोजन एवं कार्यरत महिलाओं की कार्यदशाये

कबिता चौधरी
शोधार्थी,
गृहविज्ञान विभाग,
शासकीय विजयाराजे कन्या महाविद्यालय,मुरार,
ग्वालियर ,म.प्र.

रीमा श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त प्राचार्य,
गृहविज्ञान विभाग,
शासकीय विजयाराजे कन्या महाविद्यालय,मुरार,
ग्वालियर ,म.प्र.

ज्योति प्रसाद
सेवानिवृत्त प्राचार्य,
गृहविज्ञान विभाग,
शासकीय विजयाराजे कन्या महाविद्यालय,मुरार,
ग्वालियर ,म.प्र.

सारांश

परिवर्तित आर्थिक परिवेश के कारण कार्यकारी महिला में परिवर्तन परिलक्षित हुआ है। शिक्षित कार्यशील महिला जीवन के नवीन मूल्य नव–विचार उद्देश्यपूर्ण जीवन तथा अपने अस्तित्व को खोजने में लगी है, परन्तु सांस्कृतिक मूल्यों की धरोहर सम्भालते हुए वह पारिवारिक दायित्वों को निभाना भी अपनी मूलभूत जिम्मेदारी समझती है।

इस प्रकार कार्यशील महिला के ऊपर घर एवं कार्यालय की दोहरी जिम्मेदारी होती है। दोनों ही भूमिकाऐं अपने स्थान पर महत्वपूर्ण है। किसी को भी नजर अंदाज किये बिना सुचारू रूप से निभाने में निश्चय ही महिला के सम्मुख अनेक समस्यायें उत्पन्न होती हैं। सामान्यतः परिवारजन महिला की इस समस्या को समझने का प्रयास नहीं करते हैं उन्हें सदैव ही महिला से शिकायत रहती है कि वह घर की उचित व्यवस्था की तरफ ध्यान नहीं देता है।

मुख्य शब्द : पारिवारिक समायोजन, आर्थिक परिवेश, सांस्कृतिक

प्रस्तावना

भारतीय सामाजिक दृष्टि में महिला को सम्पूर्ण स्वायत्ता की स्वीकृति में संकोच तो है ही, महिला द्वारा कार्यशीलता के प्रयासों को ''अधिकार'' की अपेक्षा आवश्यकता मात्र माना जाता है। अर्थात् आर्थिक दवाबों के कारण मजबूरी में दी गई छूट को अधिक समर्थन दिया जाता है जिसके फलस्वरूप महिला परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान कर एवं पुरूष के प्रयासों को मात्रात्मक सम्बल दे सके। किन्तु कार्यशील स्थिति एवं भूमिका निर्वाह के बावजूद महिला को पुरूष के समान अधिकारों का भागीदार मानने में संशय एवं प्रतिरोध बना हुआ है।

भारतीय कार्यशील महिलाओं के सम्मुख अन्य चुनौती भी है। एक ओर यदि वे शिक्षित हैं तो आधुनिकता की प्राथमिकतायें उनको प्रेरित करती है यद्यपि पारम्परिक सामाजिक आग्रह उनकी दिशा एवं दृष्टि में गतिरोध प्रस्तुत करते हैं। यदि कार्यशील महिला शिक्षित नहीं भी है तो भी कार्यस्थल की अनिवार्यताओं से वह अछूती नहीं रह सकती, किन्तु परिवार की पारम्परिक दृष्टि में मूलभूत परिवर्तन नहीं हो पाते। गृहणी की भूमिका के पारम्परिक सन्दर्भ को अभी पूर्ण रूप से अप्रभावी नहीं बनाया जा सका है इस विरोधाभास के कार्यशील महिला की चुनौतियाँ यथास्थिति विद्यमान है। अनुभव एवं पर्यवेक्षण के आधार पर देखा जा सकता है कि अधिकतर कार्यशील महिलायें तनाव एवं गतिरोध पर नियन्त्रण पाने हेतु या तो अपनी स्वभाविक स्वायत्ता के मूल्य पर समझौता करना अपेक्षित मानती है अथवा विरोधाभासी जीवन को स्वीकार कर लेती है।

समायोजन

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में परेशानियाँ, कठिनाईयाँ और अड़चनें आती रहती हैं, वह इन्हें दूर करने के लिए प्रयास करता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति को इन स्थितियों में सफलता की प्राप्ति नहीं होती है और तनाव एवं चिन्ताओं का क्रम शुरू होता चला जाता है यदि व्यक्ति अपनी परेशानी तथा कठिनाइयों पर सफलता हाँसिल कर लेता है तो उसे हम समायोजित व्यक्ति कहते हैं। समायोजित व्यक्ति के जीवन को पूर्ण प्रभावित कर सफलता के परिणाम प्रदान करता है।

व्यक्ति के लक्ष्य की प्राप्ति के बीच बाधा आने की वजह से व्यक्ति तनाव का अनुभव करता है इसके पश्चात् वह बाधा को हल कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। लक्ष्य पूर्ण होने के पश्चात् उसे सफलता व सन्तुष्टि का अनुभव होता है और तनाव का अन्त हो जाता है। वह एक स्वस्थ एवं सम्पूर्ण समायोजन स्थापित कर पाता है और स्वास्थ्य समायोजन सामान्य व्यवहारों को उत्पत्त करता है।

जब हमें बाधाओं का निवारण नहीं मिलता है तो हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। साथ ही साथ हमारी शक्तियाँ दूसरी ओर मुड़ जाती हैं हम अपने मन में विफलता और असंतुष्टि का अनुभव करते हैं, फिर तनाव भी तीव्रता से बढ़ जाता है परिणामस्वरूप उसका समायोजन अस्वस्थ प्रकार का हो जाता है अस्वस्थ्य समायोजन असामान्य व्यवहार को उत्पन्न करता है।

प्रस्तुत शोध में महिलाओं की कार्यदशाओं का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जहाँ एक ओर धनात्मक कार्यदशायें महिलाओं के समायोजन को प्रेरित करती है वहीं नकारात्मक कार्यदशायें महिला के समायोजन में बाधा उत्पन्न करती है।

उद्देश्य

पारिवारिक समायोजन एवं कार्यरत महिलाओं की कार्यदशाओं का अध्ययन करना।

1. महिलाओं के कार्यस्थल के वातावरण का अध्ययन करना।
2. कार्यकारी महिलाओं के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
3. कार्यदशा एवं पारिवारिक समायोजन स्तर में सम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध पद्धति

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध वृहत्तर ग्वालियर में किया गया जोकि प्राचीन ग्वालियर लश्कर तथा मुरार तीन उपवर्गों में बंटा हुआ है जिसका क्षेत्रफल 8288 वर्ग मीटर है। शोधार्थी का विषय केवल कार्यकारी महिलाओं से सम्बन्धित है अतः चयनित क्षेत्र में से केवल कार्यकारी महिला वर्ग को ही सम्मलित किया गया है।

प्रतिदर्श का चुनाव

शोध के प्रथम चरण में ग्वालियर की शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं की सूची तैयार की गई। इस सूची में से महिलाओं को क्षेत्रीय जनसंख्या के आधार पर दैवनिदर्श विधि द्वारा 300 महिलाओं का चयन किया गया है जिसमें 30 से 50 वर्ष की ऑफिस, चिकित्सालय विद्यालय और महाविद्यालय में कार्य करने वाली 300 शासकीय महिलाओं को सम्मिलित किया गया, जो मध्य और उच्च, सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रतिनिधित्व करती है। इन महिलाओं की कार्यदशाओं का अध्ययन करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

समायोजन स्तर की मापनी

समायोजन का मापन प्रमोद कुमार द्वारा निर्मित समायोजन मापनी द्वारा किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण एवं परिणाम

तालिका क्रमांक–1

महिलाओं के कार्यस्थल के वातावरण में सार्थक विभिन्नता को दर्शाने वाली तालिका

कार्यकारी महिलाए	शांत	अशांत	सहयोगात्मक	असयोगात्मक	स्नेह पूर्ण	योग	X^2	df	P Value
मोतीमहल	12	21	10	10	07	60	70.81	10	P<0.01 पर सार्थक
शिक्षिका	15	10	16	16	18	75			
नर्स	05	08	12	05	05	35			
डॉक्टर	09	—	07	—	04	20			
सिंचाई विभाग	02	06	08	05	04	25			
लेखा शाखा	21	17	18	22	07	85			
योग	64	62	71	58	45	300			

उपरोक्त तालिका कार्यकारी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का प्रदर्शन करती हैं, जिसका काई मान 70.81 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर अपनी सार्थकता सिद्ध करती हैं।

तालिका क्रमांक–2

कार्यकारी महिलाओं के समायोजन स्तर में सार्थक विभिन्नता को दर्शाने वाली तालिका

कार्यकारी महिलाए	उच्च	मध्यम	निम्न	योग	X^2	df	P Value
मोतीमहल	25	31	04	60	87.42	10	P<0.01 पर सार्थक
शिक्षिका	40	30	05	75			
नर्स	16	14	05	35			
डॉक्टर	13	07	&	20			
सिंचाई विभाग	09	12	04	25			
लेखा शाखा	30	31	24	85			
योग	133	125	42	300			

उपरोक्त तालिका कार्यकारी महिलाओं के समायोजन स्तर में विभिन्नता को प्रदर्शित करती है जिसका काईमान 87.42 है जो कि 0.01 स्तर पर अपनी सार्थकता प्रकट करता हैं।

तालिका क्रमांक–3
कार्यदशा एवं समायोजन स्तर में सम्बन्ध के प्रतिशत को दर्शाने वाली तालिका

समायोजन स्तर	कार्यस्थल सम्बन्धी कार्यदशायें						योग	
	उच्च		मध्यम		निम्न			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च	17	15.60	61	55.96	31	28.44	109	36.33
मध्यम	29	18.07	115	69.27	21	12.66	166	55.33
निम्न	07	28.00	12	48.00	06	24.00	25	8.33
योग	54	18.00	188	62.67	58	19.33	300	100.00

उपरोक्त तालिका यह प्रदर्शित करती है कि महिलाआं की कार्यस्थल की कार्यदशायें व समायाजन स्तर में संबंध पाया जाता है। उच्च स्तर की (18 प्रतिशत) मध्यम स्तर की (62.67 प्रतिशत) तथा निम्न स्तर की (19. 33 प्रतिशत) महिलायें पाई गई। जिनका समायोजन स्तर क्रमशः 36.33 प्रतिशत, 55.33 प्रतिशत तथा 8.33 प्रतिशत पाया गया।

कार्यदशा एवं समायोजन स्तर में सम्बन्ध को सार्थक

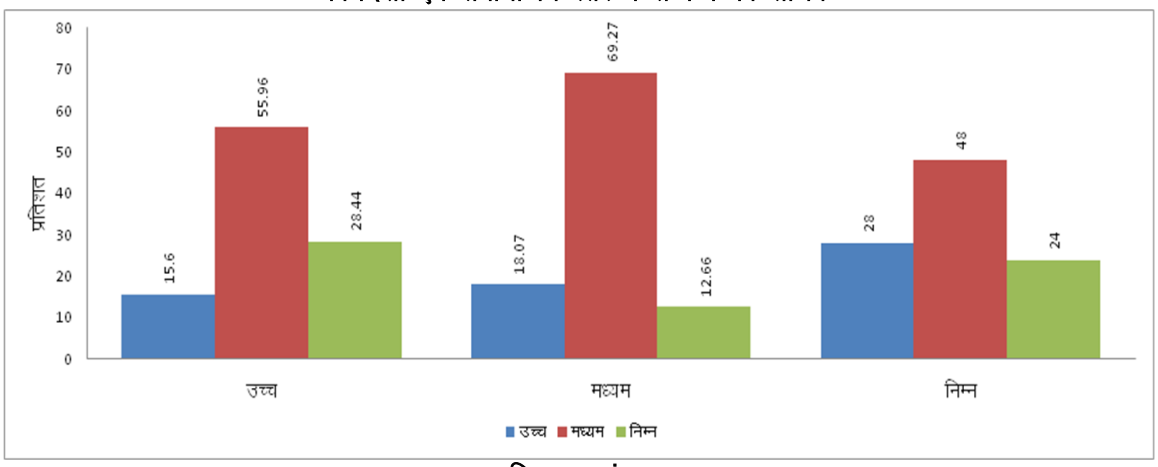

तालिका क्रमांक–4
कार्यदशा एवं समायोजन स्तर में सार्थक सम्बन्ध को दर्शाने वाली तालिका

समायोजन स्तर	कार्यस्थल सम्बन्धी कार्यदशायें			योग	X^2	df	P Value
	उच्च	मध्यम	निम्न				
उच्च	17	61	31	109	14.52	4	P<0.01 पर सार्थक
मध्यम	30	115	21	116			
निम्न	7	12	6	25			
योग	54	188	58	300			

उपरोक्त तालिका कार्यकारी महिलाओं की कार्यदशा स्तर एवं समायोजन स्तर में सार्थक संबंध की विभिन्नता को प्रकट करती है। जिसमें उच्च कार्यदशा स्तर (54), मध्यम कार्यदशा स्तर (188) तथा निम्न कार्यदशा स्तर की (58) महिलायें हैं तथा समायोजन स्तर में उच्च (109), मध्यम (166) तथा निम्न में (25) कार्यकारी महिलायें पाई गई। जिसका काई मान ज्ञात करने पर 14. 52 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी सार्थकता सिद्ध करती है।

विश्लेषण परिणाम

सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग कर निम्नलिखित तालिकाएँ निर्मित की गई है–

तालिका क्रमांक–1 कार्यकारी महिलाओं के विभिन्न पारिवारिक वातारण का प्रदर्शन करती है। पारिवारिक वातावरण कार्य का काई मान 70.81 है जो .01 पर अपनी सार्थकता प्रकट करता है।

तालिका क्रमांक–2 कार्यकारी महिलाओं के समायोजन स्तर में भी सार्थक विभिन्नता पाई गई .01 स्तर पर सार्थक है।

तालिका क्रमांक–3 महिलाओं की कार्यदशात समायोजन स्तर में सार्थक सम्बन्ध को दर्शाती है यह भी . 01 स्तर पर अपनी सार्थकता प्रकट करती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार यह शोध कार्य यह स्पष्ट करता है कि उचित पारिवारिक समायोजन हेतु धनात्मक कार्यदशायें आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. तुलनात्मक 'भट्ट कुमारी, आभा ''मध्यमवर्गीय एवं निम्नवर्गीय महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति'' अध्ययन अप्रकाशित शोध ग्रन्थ कानपुर विश्वविद्यालय।*

2. *दीक्षित शिखा ''उत्तर प्रदेश में निर्धनता उन्मूलन अभियान या महिलाओं की सामाजिक दशा पर प्रभाव''*
3. *जैन मंजू ''कार्यशील महिलाऐं एंव सामाजिक परिवर्तन'' प्रिन्ट वैल, रूपा बुक्स प्रा. लिमिटेड, एस–12 शिपिंग सेन्टर तिलक नगर, जयपुर पृ. संख्या 105*
4. *कपूर प्रमिला 'मैरिज एण्ड वर्किंग विमेन इण्डिया दिल्ली विकास, 1970*
5. *कपूर प्रमिला ''कामकाजी भारतीय नारी'' वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001*
6. *पाण्डेय प्रतिभा ''पारिवारिक हिंसा का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' 2004*